कोई ल्यावत मिठाई को, कोई और और साज ।
सब खुसाल होए के, अरूगावत हैं श्री राज ॥५४॥

आप श्री जी थाल आरोग रहे थे तो कोई सुन्दरसाथ मिठाई लाता था तो कोई कुछ लाता था । सब प्रेम से आरोगा रहे थे ।

इत खुसाल होए के, रजा दई श्री राज ।
जाए पधारो एकान्त, अब देखो हमारा काज ॥५५॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज मोमिनों पर बहुत प्रसन्न हुए तथा मोमिनों को जाने के लिए आज्ञा दी । तब श्री लालदास जी ने कहा कि हे श्री जी ! आप कहीं एकान्त में जाकर पधारिए । अब हम आपके ही आशीर्वाद से यह काम करेंगे ।

महामत कहें ऐ मोमिनों, सुनियों एह बीतक ।
अब आगे तुमको कहों, जो हुआ हुकम हक ॥५६॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! इस बीतक को अच्छी तरह से सुनिए। अब श्री राज जी महाराज के हुकम से जो कुछ हुआ, उसे आगे कहता हूं ।

(प्रकरण ४२, चौपाई २१०४)

साथ सबे मिल बैठ के, लगे करने परियान ।
अब हमको क्या करना, ए क्यों ल्यावे ईमान ॥१॥

अब सब सुन्दरसाथ मिलकर विचार विमर्श करने लगे कि हमें क्या करना चाहिए जिससे औरंगजेब को आखरूल जमां ईमाम मेंहदी स्वामी जी पर ईमान आ जाए ।

बिना आपा दिए, और ना लिया जाए ।
एही दिल में विचारिया, और नही उपाए ॥२॥

अपने आपको कुर्बान किए बिना अब और कोई रास्ता नही है । सबने विचार करके अपने दिल में यही निर्णय लिया कि इसका और कोई उपाय नही है ।

काएरों के दिल में, बड़ा जो पैठा डर ।
दिल में मुनाफकी थी, बनाए बातें करें ऊपर ॥३॥

इनमें से जो बुजदिल (कायर) सुन्दरसाथ थे, उनको मरने का बहुत डर लगा । उनके दिल में मुनकरी आ गई, इसलिए ऊपर से बनावटी बातें बनाकर अपने को ईमान वाला दिखाते थे ।

Nijanand App

एक आसिक इन भांत के, आगे धरे कदम ।
पीछे खड़े रहने वाले, सौंपी अपनी आतम ॥४॥

उनमें से इस प्रकार के भी आशिक थे जिनको मरने का कोई भी डर नहीं था और कार्य करने के लिए आगे कदम बढ़ाते थे । कुछ ऐसे भी आशिक थे जिनके ईमान तो पक्के थे लेकिन पीछे रहना चाहते थे ।

एक आसिक इन भांत के, तन मन दिया वार ।
कुरबानी एह सुनते, ऊपर परवरदिगार ॥५॥

और कुछ ऐसे भी आशिक थे, जो श्री राज जी महाराज के नाम पर कुर्बान होने का अवसर आया है, यह सुनकर तन, मन, धन से कुर्बानी के लिए तैयार थे ।

प्रमाण : कुरबानी को नाम सुन, मोमिन उलसत अंग ।
पीछे हुते जो मोमिन, दौड़ लिया तिन संग ॥

मोमिन एही परीछा, जोस न अंग समाए ।
बाहेर सीतलता होए गई, माहें मिलाप धनी का चाहें ॥

(किरंतन, प्रकरण ९०, चौपाई ९, १०)

एक लखमन इनमें, और सेख बदल ।
सिताब करें पहुंचावने, इनको न परे कल ॥६॥

ऐसे फना होने वाले मोमिनों में एक श्री लालदास जी और शेख बदल थे । सुलतान को पैगाम पहुंचाने के लिए इन्हें जल्दी लगी थी और एक पल भी चैन नहीं पड़ रहा था ।

और मुल्ला काइम, चाकर पैसों का ।
इनको उपली पहिचान, ए था नानिया फिरका ॥७॥

और कायम मुल्ला, जो नौकरी पर रखा गया था, वह नानिये फिरके का था परन्तु पैगाम पहुंचाने के काम में यह भी मर मिटने को तैयार था ।

और भीम भाई रहें, सूरत के महाजर ।
छोड़ कबीला संग रहे, थे फिदा इसलाम पर ॥८॥

भीम भाई, जो सूरत के सुंदरसाथ थे, वे अपना कुटुम्ब कबीला छोड़कर श्री निजानन्द सम्प्रदाय, दीने इस्लाम पर फिदा थे ।

Nijanand App

भाई सोम जी खंभात से, आए मिले थे इत ।
घर इनके खंभात में, है कुरबान ऊपर बखत ॥९॥

खंभात के रहने वाले सोमजी भाई दिल्ली में आकर सुन्दरसाथ से मिले थे । ऐसे कुर्बानी के अवसर को देखकर वे धनी के नाम पर कुर्बान होने को तैयार खड़े थे ।

नागजी सूरत से, चले छोड़ कबीला खास ।
इनको धाम धनी बिना, और न थी दिल आस ॥१०॥

सूरत के नाग जी भाई कुटुम्ब कबीला छोड़कर इन सुन्दरसाथ में शामिल हुए थे और उनको एक धाम धनी के बिना दुनिया में और किसी की चाहना ही नही थी ।

खिमाई बुन्देलखण्ड से, आया ले ईमान ।
खिजमत करी तन धन सों, पूरी भई पहिचान ॥११॥

बुन्देलखंड के रहने वाले खिमाई भाई जी श्री जी की पूरी पहचान कर बड़े ईमान के साथ तन, मन और धन से सेवा में समर्पित हुए ।

दयाराम दिल्ली मिनें, था ईमान लिए जोस ।
सेवा खिजमत में रहे, कबहूं ना थी फरामोस ॥१२॥

दिल्ली में रहने वाले दयाराम जी हर कार्य को पूरे ईमान के साथ करते थे और सेवा में किसी भी प्रकार की कभी भी लापरवाही नही करते थे । वे भी इन मोमिनों में शामिल थे ।

चिन्तामन ठटे मिने, ल्याए थे ईमान ।
खिजमत करी तन धन सों, पूरी भई पहिचान ॥१३॥

ठटे नगर के कबीरपंथ के आचार्य चिन्तामणि जिन्होंने चर्चा सुनकर श्री जी के स्वरूप की पूरी पहचान करी थी, वे भी अपने कुटुम्ब कबीले की आस छोड़ कर सेवा में हाजिर थे ।

चंचल बड़े ईमान सों, रहे खिजमत में हुसियार ।
आस कबीला छोड़ के, मिला परवरदिगार ॥१४॥

दिल्ली के रहने वाले चंचल दास जी बड़े ईमान के साथ हर सेवा में हाजिर रहते थे । कुटुम्ब परिवार को छोड़ कर यह भी धाम धनी पर समर्पित हुए ।

रहे दुकान अपनी, एह जो गंगा राम ।
ईमान से खिजमत करे, रहें सेवा के काम ॥१५॥

दिल्ली के गंगा राम, जो दुकानदार थे, वे भी सब कुछ छोड़कर पक्के ईमान के साथ इस कुर्बानी की सेवा में शामिल हुए ।

Nijanand App

बनारसी उगाही करें, ताजा ल्याया ईमान ।
आया ये खिजमत में, कर धनी की पहिचान ॥१६॥

दिल्ली के बनारसी दास जी उगराही करने का काम करते थे और थोड़े ही दिन पहले सुंदरसाथ बने थे परन्तु श्री जी के स्वरूप की पहचान हो जाने से यह भी पूरे ईमान के साथ धनी के चरणों में समर्पित हुए ।

और साथ बहुत है, कोई ईमान कोई मुनाफक ।
बैठे ए परियान को, पहुंचावने पैगाम हक ॥१७॥

और भी उस समय बहुत सारे सुन्दरसाथ थे, जो इस कार्य में भले ही शामिल नहीं हुए परन्तु अपने ईमान से नहीं गिरे । कुछ ऐसे भी सुन्दरसाथ थे, जिनका ईमान दिखावे का था । सुन्दरसाथ ने पैगाम पहुंचाने के लिए विचार विमर्श किया ।

आपस में मसलत करी, जाए जुमें मेहेजद ।
तहाँ जाए सनंधे पढ़िए, सिफत जो महम्मद ॥१८॥

आपस में निश्चय किया कि सबसे पहले हमें काजी मुल्लाओं वाला भेष धारण करके जामा मस्जिद में जाकर महंमद की सिफत "बिना एक महंमद की" सनंध पढ़नी चाहिए ।

तब पुकार आपस में पड़े, सुनेगा सुलतान ।
तब हमकों बुलावेगा, तब पैगाम सुनावें कान ॥१९॥

मुसलमान जब उसको सुनेंगे तो निश्चय ही वे मुसलमान बादशाह तक हमारी बात पहुंचा देंगे । तब बादशाह हमें बुलायेगा और हम ईमाम मेंहेदी साहिब के आने का पैगाम उन्हें सुना देंगे ।

यह मसलत करके, जाए खड़े मेहेजद में ।
गावत सनंधे जोस में, आसिक होनें सें ॥२०॥

यह विचार विमर्श करके सभी जामा मस्जिद में जाकर खड़े हो गए । ईमान वाले आशिक होने के कारण जोश में आकर सनंध की वाणी को गाने लगे ।

इमाम जो मेहेजद का, तिनने सुनी पुकार ।
उतर आया ऊपर से, सुनी सिफत परवरदिगार ॥२१॥

जो मस्जिद का ईमाम था, वह उस आवाज को सुनकर ऊपर से नीचे उतर आया और उसने मोमिनों के मुख से ईमाम मेहेंदी के आने की वाणी सुनी ।

Nijanand App

नाम सुनत इमाम का, बहुत हुआ खुसाल ।
मोमिनों मुख देख के, जोस भरे लिए हाल ॥२२॥

ईमाम मेहेंदी के आने की बातें सुन कर ही वह बहुत प्रसन्न हुआ। जब उसने मोमिनों की तरफ देखा तो उनके मुख जोश और आवेश से भरे हुए चमक रहे थे ।

देखे तारा दीन के, नजर करी आसमान ।
रहमत रहमत करके, हुई हक सुभान ॥२३॥

उसने मोमिनों के अंदर दीने इसलाम के ज्ञान का नया ही तारा देखा और आसमान की तरफ नजर उठा कर अल्लाह से रहमत ! रहमत ! (मेहर करो ! मेहर करो !) कह कर दुआ मांगने लगा कि यह मेहर अल्लाह ताला ने ही की है ।

मैं जाऊं सुलतान पे, लेके अपने साथ ।
बात तुम्हारी मैं कहों, ले चला पकड़ के हाथ ॥२४॥

तब उस ईमाम ने मोमिनों से कहा कि आओ ! मैं तुम्हें सुलतान के पास ले चलता हूं। तुम्हारी सुनाई हुई यह खुशखबरी मैं बादशाह से कहूंगा। ऐसा कह कर वह अपने साथ मोमिनों को लेकर चला।

अन्दर जाए के ये कही, आया पैगाम इमाम ।
मैं ल्याया लोग तिनके, तुम आइयो एह काम ॥२५॥

जामा मस्जिद के सामने ही लाल किले में औरंगजेब का निवास स्थान था। वहां वह मोमिनों को ले गया और स्वयं बादशाह के महल में जा कर उससे कहा कि ईमाम मेंहदी साहिब का पैगाम आया है । मैं उनके मोमिनों को साथ में लाया हूं। आप कृपया इस कार्य के लिए बाहर आइए ।

मोहोल में से सुनके, निकल आया सुलतान ।
हुआ ठाढ़ा चबूतरे पर, हाथ आसा एक सुने कान ॥२६॥

सुलतान इस बात को सुनते ही महल से बाहर आया और आ कर चबूतरे पर खड़ा हो गया। वह एक हाथ में छड़ी के सहारे खड़ा हो गया तथा मोमिनों की बात सुनने लगा।

मोमिन तले चबूतरे, खड़े जाए निकट ।
जो लिखा लोमोफूज में, और भई खट पट ॥२७॥

मोमिन जो चबूतरे के नीचे खड़े थे, वे बादशाह के निकट खड़े हो गये। अल्लाह ताला ने जो पहले से ही कुरान में लिखवाया था, वही सब हुआ। उधर उन काजियों में खटपट हो गई, जिनके पास मोमिन सन्देश ले जाते थे ।

Nijanand App

तब पूछा सुलतान ने, इसारत सों आए।
तब बोले इत मोमिन, कलमा जुबान चलाए ॥२८॥

तब सुलतान ने मोमिनों से इशारा करके पूछा कि आप क्या चाहते हैं ? तब मोमिनों ने मुंह से कलमे को पढ़ा ।

फेर इसारत करी सुलतान ने, क्या मतलब है तुम।
तब इनने जवाब दिया, दीन इसलाम के आसिक हम ॥२९॥

फिर दुबारा सुलतान ने इशारा किया कि आप क्या चाहते हैं ? तब मोमिनों ने जवाब दिया कि हमें इस फानी मुरदार दुनियां का कुछ भी नहीं चाहिए। हम तो केवल दीने इस्लाम (निजानन्द सम्प्रदाय) के आशिक हैं तथा ईमाम मेंहदी के आने का पैगाम ले कर आए हैं ।

कछु मतलब अपना कहो, कछु मांगो मुझ से ।
कहया एक बात हम मांगत, रूबरू बातें करें तुम से ॥३०॥

तब सुलतान ने कहा कि तुम अपने जिस निजी काम से आये हो, वह मुझ से कहो तथा जो मांगना चाहते हो वह मांग लो । तब मोमिनों ने कहा कि हम एक ही बात मांगते हैं कि आप हमसे कुरान के द्वारा अकेले में वार्ता करें ।

हमारी बातों मिने, आवे न कोई दरम्यान ।
पूछो सुनो तुम हमसे, और न सुनावें कान ॥३१॥

हमारी और आपकी जब चर्चा हो तो बीच में किसी भी काजी को आने का अख्त्यार नही होना चाहिए। आप ही केवल हमारे से पूछो और सुनो । अब हम और किसी से कोई भी बात नही करना चाहते ।

फेर मोमिनों से पूछिया, कछु और कहो सबब ।
तुम्हें तो कह सुनाया, हमें नाहीं मुरदार का मतलब ॥३२॥

सुलतान ने फिर मोमिनों से पूछा कि तुम्हारा कोई और निजी काम हो या तुम्हारे आने का कोई और कारण हो तो कहो । तब मोमिनों ने उत्तर दिया कि हमने तो पहले ही आपसे कह दिया है कि हमें इस मुरदार (फानी) दुनियां का कुछ नही चाहिए ।

आसा लेके चूमियां, तीन बेर सुलतान ।
तब मोमिन बोले जोस में, हम चौड़ा रूक्का सुनाया कान ॥३३॥

बादशाह इनकी बातों को सुनकर बहुत हैरान हुआ और अपनी छड़ी को लेकर अल्लाह-अल्लाह कह कर तीन बार चूमा । तब मोमिनों ने जोश में आकर कहा कि गुसलखाने पर रूक्का चिपकाने वाले हम ही लोग हैं ।

Nijanand App

पांच नलुए पाँचन पर, भेजे तुम खातर ।
एक काजी सेख निजाम पर, और रजवी खान पर ॥३४॥

आपके दरबार के बड़े-बड़े पाँच दरबारियों पर पाँच रूक्के लिखकर तुमको ईमाम मेंहदी साहिब के आने का पैगाम भेजा था । एक काजी शेख निजाम पर, दूसरा रजवी खान पर भेजा था ।

चौथा सीदी पोलाद पर, ना लिया आकिल खान ।
सो सब तुम्हारे वास्ते, सुनो तुम सुल्तान ॥३५॥

चौथा सीदी पौलाद पर लिखा था और आकिल खान ने लिया ही नही था । यह सब आपके लिए ही किया था कि आप तक पैगाम पहुंच जाए ।

इत खड़े सेख सलेमान, कांपे आगे खड़ा सुलतान ।
जिन ए मेरी बात को, अब सुनावें कान ॥३६॥

वहां शेख सुलेमान भी खड़ा था । मोमिनों को देख कर डर के मारे कांपने लगा कि कहीं अब मोमिन मेरी कोई शिकायत न कर दें ।

तब पूछा सुलतान नें, है तुम पे किताब ।
तब इन यारों कह्या, हम मंगावे सिताब ॥३७॥

तब सुल्तान ने मोमिनों से पूछा कि क्या तुम्हारे पास कोई किताब है, तो मोमिनों ने उत्तर दिया कि जो किताब आप कहो हम उसे शीघ्र मंगा देते हैं ।

फेर सुलतान नें कह्या, कछु मांगत हो तुम ।
कह्या मांगें दीन महम्मदी, और न चाहें हम ॥३८॥

फिर सुल्तान ने कहा कि तुम कुछ और मांगना चाहते हो तो मांग लो । तब मोमिनों ने कहा कि हम महंमद साहब के दीन को चाहने वाले हैं । उसी के बारे में कुछ चर्चा करना चाहते हैं । उसके बिना हमें और कुछं नही चाहिए ।

मोमिन बोले अपने जोस में, डर दिल भया सुलतान ।
और दूर खड़े सब कांपत, सुन सखत कलाम दरम्यान ॥३९॥

सब मोमिन बड़े जोश में बोल रहे थे जिससे सुल्तान के दिल में डर बैठ गया । मोमिनों के सीधे एवं तीखे शब्दों वाले जवाब सुनकर शरीयत के काजी भी घबराहट से कांप रहे थे ।

Nijanand App

इन में दस तन एक खिलके, दो तन मुसलमान ।
तब इसारत ए करी, घर पहुंचाओ पोलाद खान ॥४०॥

इन १२ मोमिनों में से १० हिन्दू थे और २ मुसलमान थे । तब बादशाह ने अपने कर्मचारियों को इशारा किया कि इनको सीदी पौलाद, कोतवाल के पास भेज दो ।

तब मोमिन दुदले भए, आया गुरजबरदार ।
तिनने कह्या कोतवाल को, सुनो एह विचार ॥४१॥

उसके इस व्यवहार को देखकर मोमिन चिंतित हो गए । इतने में एक सिपाही मोमिनों को लेकर कोतवाल के पास ले गया और कहा कि तुम इन लोगों के विचारों और वचनों को सुनो ।

तब से आज दिन लों, ऐसा सखत न बोल्या कोए ।
सुलतान के मुंह पर, ऐसा मजाल न काहू होए ॥४२॥

आज दिन तक बादशाह के सामने ऐसे कठोर शब्द कोई भी नहीं कह सका और न ही सुल्तान के सामने बातें करने की किसी की हिम्मत हुई है ।

इनों बातें करते करते, कोई न आया दृष्ट ।
इनकी बातां सुनते, काँपत सारी सृष्टि ॥४३॥

ये मोमिन जब बादशाह के सामने जोर से बातें कर रहे थे । तब इन को खुदा के सिवाय और कोई नजर ही नही आ रहा था । इनको बादशाह के सामने भी डर नही लगा । उल्टा सब दरबारी लोग वहां खड़े-खड़े कांप रहे थे ।

ओ तो कह पीछा फिरा, इसारत भई सीदी पोलाद ।
तुम इनकी बातां सुनियो, पूछ देखो बुनियाद ॥४४॥

वह सिपाही कुल हवाला देकर वापिस चला गया । तब सीदी पौलाद को इशारा किया गया कि तुम इन लोगों की बातें सुनो । आरम्भ से इनके जीवन की भली प्रकार से जानकारी लो ।

इनों को नीके राखियो, खाने पीने की खिजमत ।
दिलगीर होने न पावहीं, मैं सौंपे तुमको इत ॥४५॥

मोमिनों को अपने पास आदर भाव से रखना तथा खूब खाने-पीने की सेवा करना । ये किसी प्रकार से दुःखी न हों । मैंने तुम्हारे हवाले इनको सौंप दिया है ।

Nijanand App

इन समै दिल्ली मिने, घर घर पड़ी खड़ भड़ ।
जिनके घर के संग थे, तिने भया बड़ा डर ॥४६॥

इस बात की खबर जब दिल्ली में सारी जनता को मिली कि मोमिनों को पकड़कर कोतवाल के पास भेज दिया गया है तो घर-घर में हलचल मच गई । इन १२ मोमिनों के जो दिल्ली में रहने वाले सगे-सम्बन्धी थे, वे बहुत भयभीत हो गए ।

दयाराम के घर में, बड़ा जो हुआ सोर ।
दयाराम के बदले, हम पहुंचावें और ॥४७॥

दयाराम भाई के परिवार वालों को जब यह पता चला तो उन्हें बहुत दुःख हुआ । तब उन्होंने विचार किया हम दयाराम के बदले किसी और व्यक्ति को वहां पहुंचा दें ।

खाने पीने की बात जो, पुछाई कोतवाल इनों से ।
मोमिनों मन बिचारिया, करें परियान आपस में ॥४८॥

कोतवाल ने मोमिनों से पूछा कि आप लोगों के खाने-पीने के लिए कैसे भोजन का प्रबन्ध किया जाए। तब मोमिनों ने उत्तर दिया कि हम आपस में सलाह करके बताएंगे ।

दस तन को लेए के, किए दो तन बराबर ।
संझा के समय मिनें, तब जाहिर हुई खबर ॥४९॥

दस तन हिन्दू और दो तन मुसलमान भाई होते हुए भी एक जैसे सात्विक भोजन की मांग की । संध्या के समय में कोतवाल को इस बात का पता चला । तब रात को मोमिनों को खूब यातनाएं भी दी गई परन्तु मोमिनों ने ईमाम मेंहदी के सिवाय अन्य कोई भी बात मुख से न कही ।

एह खबर सुनी काजीए नें, दिन दूसरे सेख इसलाम ।
तब बुलाए अदालत में, पूछी बात तमाम ॥५०॥

इन मोमिनों की एक पोशाक और एक खान-पान का समाचार दूसरे दिन काजी शेख इसलाम को मिला । उसने इनको अदालत में बुलाकर सब बातें पूछी ।

काफरों नें सुलतान को, सक ल्याए बीच ईमान ।
तुमको ऐसा न चाहिए, जो रूबरू बातां सुनो कान ॥५१॥

काजी मुल्ला, जो सत्य को छिपाने वाले थे, उन्होंने बादशाह के विश्वास भरे मन में मोमिनों के प्रति शक पैदा कर दिया और कहा कि आपको इन मोमिनों के सामने होकर बात नही करनी चाहिए । यह आपके लिए उचित नहीं है ।

Nijanand App

क्या जाने किसी फन्द पर, भेजे होए दुस्मन ।
तुम तिनसों बातें क्यों करो, रूबरू अपने तन ॥५२॥

क्या जाने किसी दुश्मन ने आपके विरूद्ध कोई साजिश करने के लिए इन्हें भेजा हो, इसलिए आपका स्वयं इनसे बातचीत करना ठीक नहीं है ।

पूछाओ बात गुलाम सों, वह कहेगा आए तुम ।
जब मालूम होएगा, तब देखेंगे हम ॥५३॥

आप किसी भी काजी मुल्ला को, जिस पर आपको विश्वास हो, इस कार्य के लिए आज्ञा करें । वह आकर आपको इन लोगों की सम्पूर्ण हकीकत बता देगा । जब उनके विचारों का पता लग जाएगा तो हम देख लेंगे ।

जो साहजहां के अमल में, कोई ऐसा ल्यावे तोफान ।
तो तबहीं मारे गर्दन, और बात न सुने कान ॥५४॥

यदि शाहजहां के राज्य में ऐसी कोई गुस्ताखी करता था तो वह उसको उसी वक्त मरवा देता था और वह कभी भी ऐसे आदमियों की बात नही सुनता था ।

इनको तो रहे उम्मेद, देखने को इमाम ।
तिस वास्ते चुगली न सुनी, बात रद्द करी तमाम ॥५५॥

औरंगजेब बादशाह को तो सदा ही ईमाम मेंहदी साहिब के आने की और दर्शन की चाहना लगी रहती थी । इसलिए उन मुल्लाओं की कोई भी चुगली नहीं सुनी तथा उन चुगली करने वालों की सब बातों को ठुकरा दिया ।

रूबरू बात करने का, मान लिया सुकन ।
पाजी का पाजी भेज के, हकीकत पूछी मोमिन ॥५६॥

बादशाह ने मोमिनों से रूबरू बातें करने की सलाह मान ली । बादशाह ने जिस व्यक्ति को साथियों की स्थिति जानने के लिए भेजा, वह बहुत कपटी और मक्कार निकला ।

तब इन बात सों, हुए मोमिन हुसियार ।
श्री राज के ठौर को, किया न खबरदार ॥५७॥

तब ऐसे व्यवहार से मोमिन स्वयं होशियार हो गये और कोतवाल के द्वारा कठोर यातना देने पर भी श्री जी के निवास स्थान की जानकारी नही होने दी ।

Nijanand App

तब सेख इसलाम सों, जब हुआ मजकूर ।
तब तिनों से कही, देओ जवाब कर सहूर ॥५८॥

तब शेख इस्लाम से जब मोमिनों का वार्तालाप हुआ तो मोमिनों ने शेख इस्लाम से कहा कि आप हमारी बातों को ध्यान से सोचकर उत्तर दें ।

हमारे पैगम्बर नें, क्यों ए फुरमाया तुम ।
हदीसा कुरान में यों कहया, जो दीजे कसाला गुम ॥५९॥

हम मोमिनों के प्रति कुरान हदीसों में पैगाम (निशान) लाने वाले हमारे महंमद साहिब ने आपको क्या यही हिदायत दी है कि जो लोग खुदा और महंमद पर यकीन लायें उनको कठोर यातनायें दो (गुम मार मारो) ।

जो खुदाए और रसूल पर, ल्याया होए ईमान ।
तापर कसाला पहुंचत, सुनो कलमा कान ॥६०॥

जो खुदा और महंमद साहब पर विश्वास लाये, उसे खूब गुम मार मारो । कलमा सुनकर भी क्या आप लोगों ने यही सीखा है ?

सुनके काजी रोइया, हमारे पैगम्बर कहया नाम ।
तब खलास करके, लगाए नेक काम ॥६१॥

मोमिनों की ऐसी दर्द भरी बातें सुन कर काजी रोने लगा और मन ही मन में सोचने लगा कि ये हमारे महंमद साहब को अपना कहते हैं तो हमारे इस व्यवहार से महंमद साहब के नाम पर दाग लगेगा । तब उसने तुरन्त कोतवाल से छुड़ाकर कुरान की चर्चा का ही कार्य उन्हें सौंपा ।

ना हम काहू का धन लिया, ना कछु किया छिनार ।
चोरी भी हम ना करी, तो तुम ऐसा किया क्यों खार ॥६२॥

मोमिनों ने फिर काजी से कहा कि हमने न तो किसी का धन लिया है, न ही कोई चरित्रहीनता का काम किया है और न ही कोई चोरी ही की है तो फिर हमारे साथ आपने ऐसा जलील करने वाला व्यवहार क्यों किया ?

हम न सोहबत करें सुलतान की, न जाएं उनके घर ।
हम रहेंगे तुम पे, सुनो तुम खबर ॥६३॥

यदि आप नही चाहते तो हम न तो बादशाह के घर ही जाएंगे और न ही उनसे चर्चा करने जाएंगे। हम लोग आपके पास ही रहेंगे । आप हमारे संदेश को अच्छी प्रकार से सुन लीजिए ।

Nijanand App

इन्ना इन्जुल्ना सूरत, पूछे तिनके माएनें ।
बताए दिए तिन को, राजी हुआ जान पने ॥६४॥

तब काजी ने कुरान की ''इन्ना इन्जुल्ना सूरत'' का अर्थ पूछा । मोमिनों ने लैल तुल कद्र के तीन तकरार का स्पष्टीकरण कर दिया, जिसे सुनकर काजी बहुत प्रसन्न हुआ ।

तब उनने सुलतान सों, कराई ए अरज ।
इनों की खिजमत मैं करों, सुनो मेरी गरज ॥६५॥

तब काजी ने सुलतान से प्रार्थना की कि मैं इन मोमिनों की सेवा करना चाहता हूं । मेरी प्रार्थना को कृपया स्वीकार करें ।

तबहीं हुकुम हुआ, ले जाओ अपने पास ।
इनों की खिजमत कीजियो, दिल से छूटी आस ॥६६॥

सुल्तान ने तुरन्त काजी को आज्ञा दे दी कि तुम तुरन्त इनको अपने घर ले जाओ । इनकी अच्छी तरह से सेवा करना । ऐसा हुकम तो दे दिया परन्तु बादशाह की मोमिनों से चर्चा करने की चाहना भंग हो गई ।

उनने इसी बखत में कह्या, मंगाए मलीदे देवो इन ।
खिजमत करो इनकी, ना दिलगीर होए आपन ॥६७॥

बादशाह ने काजी से उस समय यह भी कहा कि इन मोमिनों को अच्छे-अच्छे भोजन, चूरमा, मलीदा इत्यादि खिलाओ । इनकी अच्छी तरह से सेवा करते रहना । यह भी ध्यान रखना कि ये लोग हमसे जरा भी दुःखी न हों ।

ले गया अपनें घरों, रहनें को दई ठौर ।
ऊपर चौकी रहे सुलतान की, लोग बातां करें और ॥६८॥

काजी मोमिनों को अपने घर ले गया और उनके रहने की पूरी व्यवस्था कर दी । इन पर निगरानी रखने के लिए पुलिस का पहरा रहता था तो मुसलमान लोग अपने-अपने अनुमान से अलग-अलग बातें करते थे ।

दिन दूसरे बुलाए के, किया काजी मजकूर ।
तहां बातां लगा पूछने, सब कहने लगे जहूर ॥६९॥

दूसरे दिन काजी ने मोमिनों को अपने पास बुलाया और बातचीत की । वहां उसने जो भी बातें पूछी, मोमिनों ने हर बात का स्पष्ट उत्तर दे दिया ।

Nijanand App

भाई काजी के घर गए, जोस जोर हुआ बदल को ।
तिनका जहूर देखके, भागा अपनें घरमों ॥७०॥

एक दिन मोमिन काजी के भाई के घर गए । वहां शेख बदल को आवेश आ गया । उसके आवेश भरे नूरी चेहरे को देखकर काजी का भाई डरकर घर के अन्दर चला गया ।

फेर दिन तीसरे काजीएं, बुलाए अपने पास ।
दई किताब एक हदीस की, जिनमें मजकूर खास ॥७१॥

फिर तीसरे दिन काजी ने मोमिनों को अपने पास फिर बुलाया । मोमिनों ने काजी को हदीस की एक किताब दी, जिसमें खास-खास महत्व के प्रसंगों की चर्चा थी ।

तब काजी कहने लगा, ए किताब बनाई तुम ।
तुम्हारी हकीकत सब लिखी, ए जो पढ़त हैं हम ॥७२॥

हदीस को देखकर काजी कहने लगा कि यह पुस्तक जो हम पढ़ रहे हैं, मालूम होता है कि आपने इसे स्वयं लिखा है । इसलिये ही तो इसमें सब आपकी ही बातें लिखी हुई हैं ।

तब जवाब मोमिनों दिया, ए हमसे ना होए ।
तुम तो स्याने बहुत हो, क्यों न बिचारो सोए ॥७३॥

तब मोमिनों ने उत्तर दिया कि ऐसा काम हम हरगिज नही कर सकते । आप तो स्वयं समझदार हैं, ऐसा कहने से पहले आपने मन में विचार क्यों नही किया ।

हम उर्दू बाजार से, ल्याए हदिया दे ।
ते बैठे हैं जाहिर, जाए पूछो उनसे ॥७४॥

हम यह किताब उर्दू बाजार से मोल खरीद कर लाये हैं । वह दुकानदार बाजार में मौजूद बैठा है । आप उससे जाकर पूछ सकते हैं ।

तब काजी न बोलिया, पूछने लगा और बात ।
एक पहिले दिन का किस्सा, कर देओ विख्यात ॥७५॥

तब काजी सुन कर कुछ न बोल सका । वह अन्य बातें पूछने लगा कि खुदा के पहले दिन के किस्से में मोमिनों के आने का प्रसंग समझाकर मुझे बताओ ।

खिलवत अन्दर बैठ के, सुनी संनधे दोए ।
बिना एक महम्मद की, नेक कहों दोजक की सोए ॥७६॥

काजी ने घर के अन्दर एकान्त जगह में बैट कर यह दो सनंधें सुनी : पहली, बिना एक मुहम्मद की और दूसरी सनंध दोज़ख की ।

Nijanand App

तब राजी होएके, कहे फेर फेर गाओ सोए।
खड़ा दारोगा बेतल माल का, सो नागर जात का होए ॥७७॥

महंमद साहब की महिमा की सनन्ध सुनकर काजी बहुत प्रसन्न हुआ तथा उसे ही बार-बार गाने के लिए कहने लगा। सार्वजनिक खजाने का अधिकारी वहीं पर खड़ा था। वह नागर जाति का हिन्दू था।

तिनको प्यार करके, कहया सुनो ए कान।
देखो तुम्हारे खिलके में, कैसा ल्याए ईमान ॥७८॥

काजी ने बड़े प्रेम से उस दारोगा से कहा कि तुम ध्यान से सुनो। तुम्हारी हिन्दू जाति के यह लोग किस तरह से दीने इस्लाम पर विश्वास लाये हैं।

ओ भागा इन भांत सों, जाने पैठों जिमी में।
मों ऊपर जुलम भया, कहा कहों इन सें ॥७९॥

वह दारोगा लज्जित होकर वहां से ऐसे भागा मानों भूमि फट जाए और वह उसमें समा जाए। मेरे सामने ही ऐसा अनर्थ हो रहा है। मैं इन लोगों को क्या कहूं।

बड़ी दिलगिरी करके, भागा अपने ठौर।
छोड़ दिया काजीए नें, बड़ा जो हुआ सोर ॥८०॥

मन ही मन में वह दुःखी होकर अपने घर भाग गया। काजी ने उसे नही रोका क्योंकि इसी बात पर वहां बहुत शोर शराबा हो गया।

अब लगा बातें पूछने, क्यों कहिए कयामत।
दसहीं अग्यारहीं बारहीं लों, लिखी किन सरत ॥८१॥

तब काजी ने मोमिनों से कहा कि आप यह कैसे कहते हैं कि कयामत आ गई है ? आप यह भी बतायें कि दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं सदी में कयामत किस प्रकार घटाते हैं ?

तब जवाब मोमिनों दिया, ए बात बरहक।
मिने दसहीं अग्यारहीं बारमी, है लिखी इसारतें हक ॥८२॥

तब मोमिनों ने उत्तर दिया कि कयामत की यह महत्वपूर्ण बात कुरान में संकेतों में लिखी है कि दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं सदी तक कयामत हो जाएगी।

तेरहीं में तहकीक, सब माइनें साबित।
ए हादी से पाइए, खोल दे हकीकत ॥८३॥

तेरहवीं सदी में कयामत के समय को प्रमाणित एवं निश्चित रूप से बताया गया है। हमारे हादी ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी से सुनिए, वह सब हकीकत खोलकर आपको समझा देंगे।

Nijanand App

तब एक दूसरे कों, सामें लगे देखन ।
ए तो बड़ा मुकदमा, बीच गिरोह मोमिन ॥८४॥

तब काजी और वहां आए हुए सब मुसलमान एक दूसरे का मुंह ताकने लगे । मोमिनों के गिरोह का आखिरी दिन, कयामत का दावा बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रसंग है ।

सवाल एक सक्सें किया, तुमको एते दिन बीच दीन ।
क्यों न करी निमाज़ को, ल्याए थे आकीन ॥८५॥

उन मुसलमानों में से एक ने सवाल किया कि आपको इतने दिन दीने इस्लाम पर यकीन लाए हुए हो गए मगर आपने नमाज कभी नही पढ़ी ।

तब जवाब मोमिनों दिया, हमारी निमाज़ कजा न होए ।
जो मतलब दुनिया वास्ते, काम किया होए सोए ॥८६॥

तब मोमिनों ने उत्तर दिया कि हमारी नमाज कभी बन्द ही नही होती है क्योंकि हम किसी सांसारिक कार्य या स्वार्थ की भावना नहीं रखते, इसलिए हमारी नमाज कभी भी भंग नही होती । यह सब कुछ जो हम दिन-रात कर रहे हैं, यह हमारी नमाज ही तो है ।

तब निमाज़ कजा होवे, जो हम पकड़े मुरदार ।
हम वास्ते दीन इसलाम के, काम करें परवरदिगार ॥८७॥

हमारी नमाज तो तब भंग हो यदि हम इस फानी मुर्दार दुनिया की ख्वाहिशों में लगे हों । हम तो दीने इस्लाम श्री निजानन्द सम्प्रदाय के लिए उस खुदा के नाम पर समर्पित होकर उसी का कार्य करते हैं ।

तब हमारी निमाज़ को, कबहूं ना होए नुकसान ।
बैठे उठे चले बातें करें, सो सब निमाज़ ही जान ॥८८॥

इसलिए हमारी नमाज को कभी नुकसान नहीं होता । हम उठते-बैठते, चलते-फिरते और बातें करते हुए भी खुदा का ही कार्य करते हैं, इसलिए हमारे इन सब कामों को नमाज ही समझो ।

तब कह्या एक दूसरे सों, देओ इनको जवाब ।
मोंह वाए सारे रहे, मोंगे रहे विचार किताब ॥८९॥

तब उन मुसलमानों ने एक दूसरे से कहा कि अब इन मोमिनों के प्रश्नों का उत्तर दो । उत्तर न आने के कारण से हैरान रहकर वे चुप हो गए । वे कुरान की आयतों पर विचार करते हुए खड़े रहे और कुछ भी बोल नहीं सके ।

Nijanand App

फेर तीसरे दिन को, बुलाए पूछी बात ।
सुनाओ मोहे सनंधे, हम पावें अपनी जात ॥९०॥

तीसरे दिन काजी ने फिर मोमिनों को अपने घर बुला कर उनसे कहा कि आज तुम हमें वह सनन्ध सुनाओ जिसको सुनकर मुझे इमाम मेहंदी की पहचान हो और ईमान आ जाए तथा मैं भी मोमिनों के गिरोह में शामिल हो जाऊं ।

लखमन भीम बैठ के, सुनाई एक सनंध ।
इमाम के मिलाप की, पर देखें ना हिरदे अंध ॥९१॥

श्री लालदास जी तथा भीम भाई ने बैठ कर "इमाम के मिलाप" की सनन्ध सुनाई, मगर आतम का अंकूर न होने के कारण से काजी कुछ भी समझ न सका ।

मिलाप हुआ मेंहदी सों, तब कहया महामती नाम ।
अब मैं हुई जाहिर, देखा वतन श्री धाम ॥९२॥

जब श्री इन्द्रावती जी की रूह (आत्मा) का अल्लाह तआला (श्री राज जी महाराज) से दिल्ली से अनूपशहर जाते हुए मिलाप हुआ तो अल्लाह तआला उनके अन्दर विराजमान हुए और उन्हें महामति का खिताब बख्शा । इस प्रकार महामति दुनियां में जाहिर हुई और अन्दर विराजमान अल्लाह तआला (अक्षरातीत) की शक्ति से परमधाम को देखा ।

एह बात सुनके, कहया अब रखो किताब ।
तीन बेर फेर फेर के, पूछा इनके बाब ॥९३॥

यह बात सुनकर काजी ने कहा कि आप अभी अपनी इस सनंध की किताब को रख दीजिए । उसने यह बात फिर तीन बार पूछी कि ईमाम और मेंहदी के मिलन का रहस्य क्या है ?

मिलाप भया इमाम सों, एह बात बरहक ।
हम तो उमेदवार हैं, तिन में नाहीं सक ॥९४॥

ईमाम और मेंहदी (महामति) का मिलाप नित्य सत्य है और यह बात सर्वश्रेष्ठ है । काजी ने कहा कि हम लोग भी ईमाम मेंहदी के प्रगट होने की आशा रखते हैं । इसमें किसी भी प्रकार का शक नहीं है ।

पर अब बात तुम छिपाओ, जिन करो जाहिर पहिचान ।
जब जाहिर होएंगे, तब हम कदम ग्रहें ले ईमान ॥९५॥

परन्तु ईमाम मेंहदी के जाहिर होने की बात को अभी आप गुप्त रखो । उनकी पहचान को अभी जाहिर न करो । जब ईमाम मेंहदी साहब खुद जाहिर होंगे तब हम भी पूर्ण विश्वास के साथ उनके कदमों में आ जायेंगे ।

Nijanand App

मोमिन तो हैं गरीब, बकरी जेता बल ।
पढ़े बाघ ज्यों बोलहीं, ए सीधे निरमल ॥९६॥

मोमिन तो गरीब हैं, उन्हें बकरी के समान कहा गया है अर्थात् वे विनम्र होते हैं, उनमें ज्ञान का अभिमान नहीं होता और वे, ज्ञानी जो अपने अभिमान के बल पर शेर की तरह गर्जते हैं, उनके सामने चुप रहते हैं । वे निर्मल मन वाले और सीधे, सरल होते हैं ।

महामत कहे ऐ मोमिनों, ए काजी के घर की बीतक बात ।
अब कहों हादीए की, जिन खबर सुनी विख्यात ॥९७॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! काजी के घर की यह बीतक आपको सुनायी है । आप श्री प्राणनाथ जी जो हमारे हादी हैं, उन्होंने जब इस हकीकत को सुना और दुःखी हुए, वह लिखता हूं ।

(प्रकरण ४३, चौपाई २२०१)

मुलाकात सुलतान की, सुनी श्री राज नें जब ।
कान जी पहुंचा उसी दिन, बहुत गुस्से हुए जब ॥१॥

जब कान्ह जी भाई सुन्दरसाथ का पत्र लेकर श्री प्राणनाथ जी के पास पहुंचे तो बादशाह को मिलने के बाद हिरासत में लेने की बात सुनी तो उन्हें बहुत गुस्सा आ गया ।

भेजे इनों तिनको, दिया कसाला जोर ।
अब लिए कहां जात हैं, मारों इस ही सोर ॥२॥

मैंने परमधाम के आतम सम्बन्ध से मोमिनों को बादशाह के पास आत्मज्ञान का सन्देश देकर भेजा था । मेरे भेजे हुए मोमिनों को इन्होंने ऐसी यातनायें दी हैं । मैं अपने इसी सन्देश के इशारे से अपने वचन के बल से इनको समाप्त कर दूंगा ।

मैं भेजे मोमिन को, दे अपना पैगाम ।
तो गुना बैठा इनों पर, कोई न बचावे इन काम ॥३॥

मैंने मोमिनों को अपना सन्देश देकर इनके पास भेजा । सीधे-सादे मोमिनों को दोषी ठहराकर कष्ट दिया गया । अब बादशाह तथा उसके कर्मचारियों को इस गुनाह का दोष लगेगा और उन्हें बचाने वाला कोई भी नही होगा ।

जैसा मारना पैगम्बर, तैसा तिनके दोस्त ।
जाहिर होसी जहान में, इनों ऊपर अफसोस ॥४॥

मोमिन खुदा का पैगाम लेकर गए । उनको मारने का अर्थ खुदा को मारने के समान है । सारी दुनियां के सामने इस गुनाह के बदले उन्हें पश्चाताप करना पड़ेगा ।

Nijanand App